

रविवार 25 अगस्त, 2024

विषय — मन

स्वर्ण पाठ: 1 कुरिन्थियों 2: 16

"कि उसे सिखलाए? परन्तु हम में मसीह का मन है॥"

उत्तरदायी अध्ययन:

रोमियो 11: 33-36

रोमियो 15: 5, 6

- ³³ आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!
- ³⁴ प्रभु कि बुद्धि को किस ने जाना या उसका मंत्री कौन हुआ?
- ³⁵ या किस ने पहिले उसे कुछ दिया है जिस का बदला उसे दिया जाए।
- ³⁶ क्योंकि उस की ओर से, और उसी के द्वारा, और उसी के लिये सब कुछ है: उस की महिमा युगानुयुग होती रहे: आमीन॥
- ⁵ और धीरज, और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे, कि मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो।
- ⁶ ताकि तुम एक मन और एक मुंह होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की बड़ाई करो।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 26: 3, 4

- ³ जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।
- ⁴ यहोवा पर सदा भरोसा रख, क्योंकि प्रभु यहोवा सनातन चट्टान है।

2. रोमियो 12: 1, 2, 16

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- ¹ इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।
- ² और इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो॥
- ¹⁶ आपस में एक सा मन रखो; अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो; अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो।

3. 2 तीमुथियुस 1: 7

- ⁷ क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।

4. मत्ती 9: 19 (से 1st.), 20-22, 27-30 (से)

- ¹⁹ यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया।
- ²⁰ और देखो, एक स्त्री ने जिस के बारह वर्ष से लोहू बहता था, उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया।
- ²¹ क्योंकि वह अपने मन में कहती थी कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी तो चंगी हो जाऊंगी।
- ²² यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा; पुत्री ढाढ़स बान्ध; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है; सो वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई।
- ²⁷ जब यीशु वहां से आगे बढ़ा, तो दो अन्धे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले, कि हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर।
- ²⁸ जब वह घर में पहुंचा, तो वे अन्धे उस के पास आए; और यीशु ने उन से कहा; क्या तुम्हें विश्वास है, कि मैं यह कर सकता हूँ उन्होंने उस से कहा; हां प्रभु।
- ²⁹ तब उस ने उन की आंखे छूकर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो।
- ³⁰ और उन की आंखे खुल गई और यीशु ने उन्हें चिताकर कहा; सावधान, कोई इस बात को न जाने।

5. मत्ती 17: 14-21

- ¹⁴ जब वे भीड़ के पास पहुंचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और घुटने टेक कर कहने लगा।
- ¹⁵ हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर; क्योंकि उस को मिर्गी आती है: और वह बहुत दुख उठाता है; और बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है।
- ¹⁶ और मैं उस को तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके।

- 17 यीशु ने उत्तर दिया, कि हे अविश्वासी और हठीले लोगों में कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक तुम्हारी सहंगा? उसे यहां मेरे पास लाओ।
- 18 तब यीशु ने उसे घुड़का, और दुष्टात्मा उस में से निकला; और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया।
- 19 तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा; हम इसे क्यों नहीं निकाल सके?
- 20 उस ने उन से कहा, अपने विश्वास की घटी के कारण: क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह स को गे, कि यहां से सरककर वहां चला जा, तो वह चला जाएगा; और कोई बात तुम्हारे लिये अन्होनी न होगी।
- 21 जब वे गलील में थे, तो यीशु ने उन से कहा; मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा।

6. फिलिप्पियों 2: 5-11

- 5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।
- 6 जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।
- 7 वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।
- 8 और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।
- 9 इस कारण परमेश्वर ने उस को अति महान भी किया, और उस को वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।
- 10 कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।
- 11 और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है॥

7. रोमियो 8: 1-7, 11

- 1 सो अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं: क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं।
- 2 क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की, और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।
- 3 क्योंकि जो काम व्यवस्था शरीर के कारण दुर्बल होकर न कर सकी, उस को परमेश्वर ने किया, अर्थात् अपने ही पुत्र को पापमय शरीर की समानता में, और पाप के बलिदान होने के लिये भेजकर, शरीर में पाप पर दण्ड की आज्ञा दी।
- 4 इसलिये कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए।

- 5 क्योंकि शरीरिक व्यक्ति शरीर की बातों पर मन लगाते हैं; परन्तु आध्यात्मिक आत्मा की बातों पर मन लगाते हैं।
- 6 शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।
- 7 क्योंकि शरीर पर मन लगाना तो परमेश्वर से बैर रखना है, क्योंकि न तो परमेश्वर की व्यवस्था के आधीन है, और न हो सकता है।
- 11 यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुआ में से जिलाया तुम में बसा हुआ है; तो जिस ने मसीह को मरे हुआ में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।

8. इब्रानियों 8: 8 (देखो), 10 (मैं करूंगा)

- 8 कि प्रभु कहता है, देखो वे दिन आते हैं, कि मैं इस्राएल के घराने के साथ, और यहूदा के घराने के साथ, नई वाचा बान्धूंगा।
- 10 फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्था को उन के मनो में डालूंगा, और उसे उन के हृदय पर लिखूंगा, और मैं उन का परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे।

9. 1 पतरस 3: 8, 9

- 8 निदान, सब के सब एक मन और कृपामय और भाईचारे की प्रीति रखने वाले, और करूणामय, और नम्र बनो।
- 9 बुराई के बदले बुराई मत करो; और न गाली के बदले गाली दो; पर इस के विपरीत आशीष ही दो: क्योंकि तुम आशीष के वारिस होने के लिये बुलाए गए हो।

10. 1 पतरस 5: 2-4

- 2 कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर।
- 3 और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन झुंड के लिये आदर्श बनो।
- 4 और जब प्रधान रखवाला प्रगट होगा, तो तुम्हें महिमा का मुकुट दिया जाएगा, जो मुरझाने का नहीं।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 588: 11-12 (सं:), 15-19

केवल एक मैं, या हम हैं, बल्कि एक दिव्य सिद्धांत, या मन है, जो सारे अस्तित्व को नियंत्रित करता है... एक सिद्धांत द्वारा शासित होते हैं। ईश्वर की रचना की सभी वस्तुएँ एक मन को प्रतिबिंबित करती हैं, और जो कुछ भी इस एक मन को प्रतिबिंबित नहीं करता है, वह दोषपूर्ण और ग़लत है, यहाँ तक कि यह विश्वास भी कि जीवन, पदार्थ और बुद्धि दोनों मानसिक और भौतिक हैं।

2. 209: 5-8, 10-13

मन, अपने सभी स्वरूपों पर सर्वोच्च और उन सभी पर शासन करने वाला, विचारों की अपनी प्रणाली, अपने सभी विशाल निर्माण का जीवन और प्रकाश का केंद्रीय सूर्य है; और मनुष्य दिव्य मन के लिए सहायक है। भौतिक और नश्वर शरीर या मन मनुष्य नहीं है।

मन के बिना दुनिया ढह जाएगी, बिना बुद्धि के जो अपनी पकड़ में हवाओं को रखता है। न तो दर्शन और न ही संशयवाद विज्ञान की प्रगति में बाधा डाल सकता है जो मन की सर्वोच्चता को प्रकट करता है।

3. 307: 25 (वह)-30

दिव्य मन मनुष्य की आत्मा है, और यह मनुष्य को सभी चीजों पर प्रभुत्व प्रदान करता है। मनुष्य को भौतिक आधार से नहीं बनाया गया था, न ही उन भौतिक कानूनों का पालन करने पर प्रतिबंध लगाया गया है जो आत्मा ने कभी नहीं बनाए; उनका प्रांत मन की उच्च विधि में आध्यात्मिक विधियों में है।

4. 143: 26-4 (सं:)

मन भव्य रचनाकार है, और इसके अलावा कोई शक्ति नहीं हो सकती है जो कि मन से ली गई है। यदि माइंड पहले कालानुक्रमिक था, पहले संभावित रूप से है, और पहले अनंत काल तक होना चाहिए, तो माइंड को उसके पवित्र नाम के कारण गौरव, सम्मान, प्रभुत्व और हमेशा की शक्ति प्रदान करें। चिकित्सा के हीन और अस्वाभाविक तरीके माइंड और ड्रग्स को ठोस बनाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन दोनों वैज्ञानिक रूप से घुलमिल नहीं पाएंगे। हम उन्हें ऐसा करने की इच्छा क्यों करें, क्योंकि इससे अच्छा कोई नहीं आ सकता है?

यदि मन सबसे महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है, तो हमें माइंड पर भरोसा करने की आवश्यकता है, जिसे निम्न शक्तियों के सहयोग की आवश्यकता नहीं है,

5. 216: 11-21

यह समझ कि अहंकार मन है, और यह कि एक मन या बुद्धि है, एक बार में नश्वर अर्थ की त्रुटियों को नष्ट करने और अमर भावना की सच्चाई की आपूर्ति करने के लिए शुरू होता है। यह समझ शरीर को सामंजस्यपूर्ण बनाती है; यह तंत्रिकाओं, हड्डियों, मस्तिष्क इत्यादि को नौकरों के बजाय नौकर बनाता है। यदि मनुष्य दिव्य मन के नियम से संचालित होता है, तो उसका शरीर हमेशा की ज़िंदगी और सच्चाई और प्रेम को प्रस्तुत करने में है। मनुष्यों की महान गलती यह है कि उस आदमी को, भगवान की छवि और समानता को मानने के लिए, भौतिक और आत्मा दोनों अच्छाई और बुराई दोनों हैं।

6. 147: 32-6

यीशु ने कभी भी बीमारी को खतरनाक या चंगा करने की बात नहीं की। जब उनके छात्र उनके पास एक ऐसा मामला लाए, जिसे वे ठीक करने में विफल रहे, तो उन्होंने उनसे कहा, "ओ विश्वासहीन पीढ़ी," यह कहते हुए कि चंगा करने की अपेक्षित शक्ति मन में थी। उन्होंने कोई दवा नहीं निर्धारित की, भौतिक कानूनों के लिए कोई आज्ञाकारिता का आग्रह नहीं किया, लेकिन उनके लिए प्रत्यक्ष अवज्ञा का कार्य किया।

7. 149: 3-16

मन, पाप के उपचार में औषधियों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि रोग के उपचार में औषधियों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। हर मामले में दिव्य विज्ञान ही सर्वोत्तम मार्ग है। क्या मेटेरिया मेडिका एक विज्ञान है या काल्पनिक मानवीय सिद्धांतों का एक समूह है? जो नुस्खा एक स्थिति में सफल होता है, वह दूसरी स्थिति में असफल हो जाता है, और ऐसा रोगी की भिन्न मानसिक स्थिति के कारण होता है। इन स्थितियों को समझा नहीं जा सका है, तथा क्रिश्चियन साइंस को छोड़कर अन्य किसी भी क्षेत्र में इनका कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है। विज्ञान में नियम और उसके संचालन की पूर्णता कभी भिन्न नहीं होती। यदि आप किसी भी मामले में सफल नहीं हो पाते हैं, तो इसका कारण यह है कि आपने मसीह के जीवन, सत्य को, अपने जीवन में प्रदर्शित नहीं किया है, - क्योंकि आपने नियम का पालन नहीं किया है और दिव्य विज्ञान के सिद्धांत को प्रमाणित नहीं किया है।

8. 169: 18-28

विज्ञान न केवल सभी बीमारियों की उत्पत्ति को मानसिक रूप से प्रकट करता है, बल्कि यह भी घोषणा करता है कि सभी रोग दिव्य मन से ठीक हो जाते हैं। इस माइंड को छोड़कर कोई भी उपचार नहीं हो सकता है, हालांकि हम एक दवा या किसी अन्य साधन पर भरोसा करते हैं जिसके लिए मानव विश्वास या प्रयास का निर्देशन किया जाता है। यह नश्वर मन है, कोई फर्क नहीं पड़ता, जो बीमार को लाता है जो कुछ भी अच्छा लगता है वह भौतिकता से प्राप्त कर सकता है। लेकिन दैवीय शक्ति के माध्यम से बीमारों को वास्तव में ठीक नहीं किया जाता है। केवल सत्य, जीवन और प्रेम की क्रिया सद्भाव दे सकती है।

9. 400: 26-6

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

अस्तित्व में सामंजस्य लाने के लिए तथाकथित नश्वर मन की क्रिया को दिव्य मन द्वारा नष्ट किया जाना चाहिए। ईश्वरीय नियंत्रण के बिना कलह होती है, जो पाप, बीमारी और मृत्यु के रूप में प्रकट होती है।

पवित्र शास्त्र स्पष्ट रूप से शरीर पर पापपूर्ण विचारों के हानिकारक प्रभाव की घोषणा करता है। हमारे गुरुदेव को भी यह महसूस हुआ। यह दर्ज है कि कुछ स्थानों पर उसने कई महान कार्य नहीं किये, क्योंकि वहां के लोग सत्य पर विश्वास नहीं करते थे। कोई भी मानवीय भूल उसकी अपनी शत्रु है, तथा स्वयं के विरुद्ध कार्य करती है; वह सही दिशा में कुछ नहीं करती, तथा गलत दिशा में बहुत कुछ करती है। यदि तथाकथित मन बुरी भावनाओं और दुर्भावनापूर्ण उद्देश्यों को पोषित कर रहा है, तो वह उपचारक नहीं है, बल्कि वह रोग और मृत्यु को जन्म देता है।

10. 62: 27-1

मनुष्य की उच्चतर प्रकृति निम्न द्वारा शासित नहीं होती; यदि ऐसा होता, तो ज्ञान का क्रम उलट जाता। जीवन के बारे में हमारे झूठे विचार शाश्वत सद्भाव को छिपाते हैं, और उन बुराइयों को जन्म देते हैं जिनकी हम शिकायत करते हैं। चूँकि नश्वर लोग भौतिक नियमों में विश्वास करते हैं और मन के विज्ञान को अस्वीकार करते हैं, इसलिए यह भौतिकता को पहले और आत्मा के श्रेष्ठ नियम को अंतिम नहीं बनाता है।

11. 481: 7-12

भौतिक बोध कभी भी मनुष्यों को आत्मा, ईश्वर को समझने में मदद नहीं करता है। केवल आध्यात्मिक अर्थों के माध्यम से, मनुष्य समझ पाता है और देवता से प्यार करता है। भौतिक इंद्रियों द्वारा मन के विज्ञान के विभिन्न अंतर्विरोध अनदेखी सत्य को नहीं बदलते हैं, जो हमेशा के लिए बरकरार रहता है।

12. 372: 8-13

होने का विज्ञान, जिसमें सभी दिव्य मन, या भगवान और उसका विचार है, इस युग में स्पष्ट होगा, लेकिन इस विश्वास के लिए कि सामग्री मनुष्य का माध्यम है, या वह आदमी अपने स्वयं के सन्निहित विचार में प्रवेश कर सकता है, खुद को बांधता है उनकी अपनी मान्यताएं, और उनकी संबंधों की सामग्री का नाम और उन्हें दिव्य कानून का नाम देते हैं।

13. 371: 27-32

दौड़ को बढ़ाने के लिए आवश्यकता इस तथ्य के लिए पिता है कि माइंड यह कर सकता है; क्योंकि मन अशुद्धता के बजाय पवित्रता प्रदान कर सकता है, कमजोरी के बजाय ताकत और बीमारी के बजाय स्वास्थ्य। सत्य संपूर्ण व्यवस्था में परिवर्तनकारी है, और इसके “हर तिनका को पूरा” कर सकते हैं।

14. 205: 32-3

जब हम दिव्य के साथ अपने संबंध को पूरी तरह से समझते हैं, तो हमारे पास कोई अन्य मन नहीं हो सकता है, लेकिन उनका - कोई अन्य प्रेम, ज्ञान, या सत्य, जीवन का कोई अन्य अर्थ नहीं है, और पदार्थ या त्रुटि के अस्तित्व की कोई चेतना नहीं है।

15. 231: 30-2

मनुष्य, अपने निर्माता द्वारा शासित, जिसके पास कोई अन्य मन नहीं है, - इंजीलवादी के कथन पर लगाया गया है कि "सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न [दैवीय कथन] हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई," — पाप, बीमारी और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने,

परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6